International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 07-08

हिन्दी बाल–काव्य में महापुरूषों की प्रधानता

संजय कुमार
हिन्दी, ति०मां०भा०वि०वि, भागलपुर, भारत

प्रस्तावना

हिन्दी बाल–काव्य में बालक के जीवन से संबंधित घटनाओं को कवि या लेखक जब उद्घाटित करती है तो वे एक प्रेरणा स्त्रोत होता है। जिनके चिन्तन पद्य चिन्हों पर चलकर बालक उन्हीं के गुणों को ग्रहण करता है। परन्तु इस विकास को उचित दिशा देने वाला, सशक्त माध्यम हिन्दी बाल–काव्य ही है। वैसे तो अनादि काल से ही किसी न किसी रूप में लिखा जाता रहा है किंतु इस विधा को स्वतंत्रता प्राप्ति के पाश्चात्य ही विशेष बल मिला। इस काल में सामाजिकता राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक ऐतिहासिक आदि महापुरूषों के जीवन से अनेक घटना प्रसंगों के लेकर रोचक वर्णन किए गए है।

बालक राष्ट्ररूपी भवन की सुदृढ़ नींव होते हैं। जिस देश के बालक कमजोर अशिक्षित, अंसस्कारित तथा बुद्धि–हीन होते हैं, वह राष्ट्र आगे चलकर पतन के गर्त में गिर जाता है। अतः देश और समाज को उन्नतिशील बनाने के लिए उसके बालकों को योग्य बनाना अत्यन्त आवश्यक होता है। सद् बाल–साहित्य के द्वारा ही बालकों को संस्कारित किया जा सकता है। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू जी ने ठीक ही कहा था कि "मैं हैरत में पड़ जाता हूँ कि किसी व्यक्ति या राष्ट्र का भविष्य जानने के लिए लोग तारों को देखते हैं। मैं ज्योतिष की गिनतियों में दिलचस्पी नहीं रखता। मुझे जब हिन्दुस्तान का भविष्य देखने की इच्छा होती है, तो बच्चों की आँखों और चेहरों को देखने की कोशिश करता हूँ। बच्चों के भाव मुझे भावी भारत की झलक दे जाते हैं।"[1]

बालकों के र्स्वागीण विकास से ही राष्ट्र और देश का विकास सम्भव है। बालकों के व्यक्तित्व का निर्माण बाल्यावस्था में ही प्रारम्भ हो जाता है। माँ उनकी प्रथम शिक्षिका होती है। बचपन में माँ के द्वारा सुनाई गई लोरियां, कहानियाँ, कथाओं तथा कहावतों के द्वारा बालक में संस्कार उत्पन्न होने लगते हैं। बाल्यकाल ही जीवन प्रासाद की आधार भित्ती है। उसे सुदृढ़ बनाना परम आवश्यक है।

बालकों के बहुमुखी विकास के लिए भारत की स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाले वीरों महात्मा गाँधी, इंदिरा गाँधी, महाराणा प्रताप आदि है, किंतु शूरवीरों का ज्ञान कराना तथा उनके प्रति श्रद्धा का भाव जागृत कराना भी आवश्यक है। महाराणा प्रताप सच्चे अर्थों में महापुरूष थे और उनकी वीरता की कहानी कौन नहीं जानता। उन्होनें भारत की आन–वान और शान के लिए बड़े–बडे कष्ट सहन किए थे। राज वेभव के सुखो में पलने वाले महाराणा को जंगल–जंगल घूमना पड़ा और घास रोटी तक खानी पड़ी थी, तो इस तरह के महापुरूष संबंधी काव्य हिन्दी बाल–काव्य में देखने को मिलते हैं। प्राण वीर प्रताप शीर्षक कविता कुछ पंक्तियां निचे दृष्टव्य है–

"स्वतंत्रता के अमर पुजारी, यही हुआ प्रणवीर प्रताप
जिसने कष्ट सहे जीवन भर, दिया शत्रु को भी संताप
छोड़ राजसुख मै भटका बच्चों की रक्षा का भूखा
कई–कई दिन बीते लेकिन, मिला न कुछ रूखा सूखा
फूल अदृश्य शिशुवो की रोटी, घास पात की खिलवाई।"[2]

बालक किसी राष्ट्र की महान् आत्माएँ नैतिकता की अमर प्रहरी होती है ये किसी न किसी क्षेत्र के समाजिक, धार्मिक, राजनैतिक या जीवन की संकीर्णता से जुड़ी रहती है। बालक में संस्कारों का निर्माण करने के लिए उनसे संबंधित रचनाओं से अवगत कराना आवश्यक हो जाता है, ताकि वे उनका अनुगमन कर सके। इस प्रकार की रचनाएँ प्रत्येक देश और काल में होती रही है तथा होती रहेगी, किंतु स्वतंत्रता बाद भी महापुरूष संबंधी रचनाएँ हुई थी और उनका लक्ष्य बालक को ज्ञान कराना था, कि इन महापुरूषों ने किस प्रकार से परतन्त्रता पर विजय प्राप्त करके अपने देश को स्वतंन्त्र कराया, किस प्रकार की यतनाएँ उन्होंने सही और शहीद हुए, उनके जीवन के आदर्शपूर्ण व्यक्तित्व से संबंधित तथा परिचयात्मक है। विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' रचित डॉ० राजेन्द्र प्रसाद उदाहरणार्थ 'जय स्वदेश' शीर्षक कविता में देखा जा सकता है। निम्न पंक्तियों दृष्ट्रव्य है –

"जय–जय–जय राजेन्द्र प्रसाद
प्रथम राष्ट्रपति बने महान्।
फिर भी केवल रहे किसान
मिटे दूसरों की सेवा में
प्रजातंत्र को ही कर याद।।
किया देश के प्रति अनुराग
दिखलाया जन हित में त्याग
लागे कर्म की पूजा में
छोड़े मन से सभी प्रसाद।"[3]

उपर्युक्त रचनाएँ पद्य जीवनी के अंतर्गत आती है, जो परिचयात्मक शैली में लिखी गयी है। 'गीतों का प्रारंभ वन्दनागीत की भांति किया गया है। रचना में महापुरूष संबंधी कृतित्व उभर कर आए है। प्रस्तुत संकलन में गोस्वामी तुलसीदास, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, वीर सुभाष, सरदार पटेल, जवाहर लाल, लाल बहादुर शास्त्री, डा० राधाकृष्णन से संबंधित इसी प्रकार की रचनाएँ है। जिनके अंतर्गत ऐतिहासिक

सामाजिक शिक्षाविद् क्षेत्र के महान् विभूतियों का काव्यात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनमें महापुरूष संबंधी चित्र भी होते हैं, ताकि बालक उस महान् आत्मा से विशेष रूप से परिचित हो सके। इसी भांति भी रघुशरण मित्र की रचना महापुरूष, वद्री विशाल गुप्त की रचना 'जयन्तियाँ' भी इसी उद्देश्य से रचित है। ये चित्र प्रधान रचनाएँ। श्री रधुवीर शरण मित्र द्वारा रचित 'मैं बालक हूँ'। मैं बालक भूतकाल से लेकर भावी के संभाव्य तक की कल्पना अपने में करता है। वह महापुरूष के आदर्शों को ग्रहण कर तद्नुरूप बनना चाहता है। 'प्यारे देश हमारे देश से लिया गया है। जो पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

"मैं भूतकाल का दीपक हूँ,
मैं हूँ भविष्य का उजियाला।
मैं एक खिलौना आज और
कल राम कृष्ण बनने वाला।।"
मैं घर का दीपक हूँ मुझकों,
तुम दीप दिखाने आए हो।
जो स्वयं सत्य है तुम उसको
क्या सत्य सिखाने आये हो उसको।[4]

बालक यह समझता है कि उसकी शक्ति क्या है? वह स्वयं को पूर्ण समर्थ समझता है। उसे पता है कि वर्तमान में मैं भले ही बालक हूँ लेकिन शक्ति का केन्द्रभूत ज्वाला हूँ।
जिन महापुरूषों के अदभ्य साहस त्याग वलिदान देश प्रेम के परिणाम स्वरूप स्वंतत्रता प्राप्त हुई है बालक उन्ही गुणों को ग्रहण करके भारत माता का जय गान करना चाहता है। श्री रति मानु सिंह 'नाहर' की रचना 'तिनके में तूफान भरा' है अंतर्गत इसी भाव की दृष्टि की गयी। निम्न पंक्तियाँ दृष्ट्रव्य है–

"जिनकी महिमा दुनियाँ गाती है,
सोने का इतिहास बनाती।
जिनकी खूनी कपनी ओढ़े, पूरव में नित आती।।
हममें गौरव मानभरा है, देश भक्ति बलिदान भरा है।
हम सबकी यह परिभाषा है, तिनके में तूफान भरा।"[5]

उपर्युक्त रचना में आत्म गौरव गान की प्रतीक है। इससे कवि यह स्पष्ट करता है। कि हम भले ही छोटे है लेकिन शक्ति सम्पन्न है।

निस्कर्ष

हिन्दी–बाल–काव्य में महापुरूषों को आधार बना कर जो चित्र कवि ने खीचा है। उससे बालकों में बौद्धिक विकास मानसिक विकास का निमार्ण होता है। इस तरह की विघाओं से बालक अच्छे गुणों को ग्रहण करता है और वीर, वलिदानी, साहसी त्यागी आदि महापुरूषों जैसे बनना पसंद करते हैं।

संदर्भ सूची

1. प्राणवीर प्रताप चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' प्रथम भाग पृ०–24.
2. दूदंभी रति भानु सिंह नाहर पृ०– 8
3. हिन्दी बाल काव्य एक अविराम, सम्पादक विनोद चन्द्र पाण्डेय, प्राक्कधन।
4. 'जय स्वदेश' विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' प्रथम संस्करण पृ०– 28.
5. प्यारे देश हमारा देश : रघुवीरशरण मिश्र 1966 पृ०– 43.